अध्याय 2. राहुल सांकृत्यायन : ल्हासा की ओर

प्रश्न - 1. थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के बावजूद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका।क्यों?

उत्तर : इसका मुख्य कारण था-संबंधों का महत्त्व।तिब्बत में इस मार्ग पर यात्रियों के लिए एक जैसी व्यवस्थाएँ नहीं थीं।इसलिए वहाँ जान-पहचान के आधार पर ठहरने का उचित स्थान मिल जाता था। बिना जान-पहचान के यात्री को भटकना पड़ता था।दूसरे, तिब्बत के लोग शाम छः बजे के बाद छङ् पीकर मस्त हो जाते थे।तब वे यात्रियों की सुविधा का ध्यान नहीं रखते थे।

प्रश्न - 2. उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?

उत्तर : सन् 1929-30 के तिब्बत में हथियार रखने से संबंधित कोई कानून नहीं था।इस कारण लोग खुलेआम पिस्तौल, बंदूक आदि रखते थे।दूसरे, वहाँ अनेक निर्जन स्थान भी थे, जहाँ न पुलिस का प्रबंध था, न खुफिया विभाग का।वहाँ डाकू किसी को भी आसानी से मार सकते थे।इसलिए यात्रियों को हत्या और लूटमार का भय बना रहता था।

प्रश्न - 3. लेखक लङ्कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण पिछड़ गया ?

उत्तर : लेखक लङ्कोर के मार्ग में अपने साथियों से दो कारणों से पिछड़ गया-
1. उसका घोड़ा बहुत सुस्त था।
2. वह रास्ता भटककर एक-डेढ़ मील गलत रास्ते पर चला गया था।उसे वहाँ से वापस आना पड़ा।

प्रश्न 4. लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से रोका, परंतु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया?

उत्तर : लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से इसलिए रोका ताकि वह वहाँ जाकर अधिक समय न लगाए।इससे लेखक को एक सप्ताह तक उसकी प्रतीक्षा करनी पड़ती। दूसरी बार, लेखक को वहाँ के मंदिर में रखी अनेक मूल्यवान हस्तलिखित पुस्तकें मिल गई थीं।वह एकांत में उनका अध्ययन करना चाहता था।इसलिए उसने सुमति को यजमानों के पास जाने की अनुमति दे दी।

प्रश्न - 5. अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

उत्तर : अपनी तिब्बत-यात्रा के दौरान लेखक को विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।एक बार वह भूलवश रास्ता भटक गया।दूसरी बार, उसे बहुत तेज धूप के कारण परेशान होना पड़ा।

प्रश्न - 6. प्रस्तुत यात्रा-वृत्तांत के आधार पर बताइए कि उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

उत्तर : तिब्बत का तिङ्री प्रदेश विभिन्न जागीरों में विभक्त है।अधिकतर जागीरें विभिन्न मठों के अधीन हैं। जागीरों के मालिक खेती का प्रबंध स्वयं करवाते हैं।खेती करने के लिए उन्हें बेगार मज़दूर मिल जाते हैं। सारे प्रबंध की देखभाल कोई भिक्षु करता है।वह भिक्षु जागीर के लोगों में राजा के समान सम्मान पाता है। तिब्बत के समाज में छुआछूत, जाति-पाँति आदि कुप्रथाएँ नहीं हैं।कोई अपरिचित व्यक्ति भी किसी के घर

में अंदर तक जा सकता है।वह अपनी झोली में से चाय की पत्ती देकर घर की महिलाओं से चाय बनवा सकता है।सास-बहू-कोई भी इसका बुरा नहीं मानती।हाँ, बहुत निम्न श्रेणी के भिखमंगों को घरों में नहीं घुसने दिया जाता।तिब्बत के लोग जान-पहचान होने पर यात्रियों के ठहरने का अच्छा प्रबंध करते हैं। शाम के छः बजे के बाद वे छङ् पीकर मस्त हो जाते हैं।